प्यारे भाई,

रहमत और मग़फीरत के दरिया, 11 महीनों का सुल्तान मुबारक रमज़ान शरीफ़ के महिने की आपको मुबारकबाद देते हैं। अल्लाहु तआला हम सबको और तमाम इस्लामी आलम को इस महिने के मद्दी और मानवी फैज़ और बरकतों से, मुआफी और मग़फीरत का मुकम्मल इसतेफादा हासिल करने की तौफीक अता फरमाए।

अल्लाह तआला से हम दुआ कर रहे हैं और तमाम भाईयों से उनकी मुसतजब दुआओं की गुज़ारिश।

रियादुन नासीहिन किताब में लिखा है, अबु हुरेरा रज़िअल्लहु अन्हा बुख़ारी शरीफ़ में फरमाते हैं, मेहबूबे रब्बुलआलिमिन रहमतुल्लि ए अलेमिन सय्यदुल अन्बीया वल मुरसालीन, हाजेई कायनात, मेफकरी मेवजुदात, हम सभी के लिए तख़लीक किए गए दो जहानों के सूरज सरकारे दो आलम प्यारे हबीब 'सल्ल्लाओ अलेहि वसल्लम' ने फरमायाः (रमज़ान का महीना आने पे, जन्नत के दरवाज़े खोल दिये जाते है। जहन्नम के दरवाज़े बंद और शैतानों को बांध दिया जाता है। इमाम-उल-एइम्मे मुहम्मद बिन इशाक बिन हुजेयमा लिखते हैं, सलमान-ए-फारसी "रज़ि अल्लाहु अन्हा" ने बताया के, 'रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम' ने शाबान के महीने के आख़ीरी दिन कुत्बे में फरमाया केः (ऐ मुस्लमानों तुम्हारे ऊपर एक ऐसे महीने की छायाँ आने वाली है जिस महीने की एक रात (कदर की रात) हज़ार महीनों से ज़्यादा फायदेमंद है। अल्लाहु तआला ने इस महीने हर रोज़ रोज़ा रखने का हुक्म दिया। इस महीने मे, रातों की तरावीह नमाज़ पढ़ना भी सुन्नत है। इस महीने में अल्लाह के लिए एक छोटी सी भी अच्छाई करना, दूसरे महीनों मे फर्ज़ करने के बराबर है। इस महीने एक फर्ज़ करना दूसरे महीनों के मुताबिक 70 मरतबा फर्ज़ अदा करने के बराबर है। ये महीना सब्र का महीना है सब्र का बदला जन्नत है। ये महीना अच्छाईयाँ करने का महीना है इस महीने में मोमिनों का रिज़्क बड़ा दिया जाता है। इस महीने अगर कोई शख़्स किसी रोज़दार को इफ़तार कराता है, उसके गुनाह माफ़ कर दिये जाते है। हक तआला उसको जहन्नम की आग से अज़ाद कर देता है। उस रोज़दार की तरह उसे सवाब मिलता है।)

असहाबा-ए-इकराम ने फरमाया या रसूलअल्लाह! हम मे से कोई इतना अमीर नहीं के एक रोज़दार को इफ़तार दे सके उसका पेट भरा सके। अल्लाह के प्यारे नबी ने फरमाया के (एक ख़जूर से रोज़ा खुलवाने वाले, सिर्फ पानी पिलाके रोज़ा खुलवाने वाले को या थोड़ा दूध इकराम करने वाले को भी उतना ही सवाब दिया जाएगा। ये महीना, ऐसा महीना है जिसके शुरूवाती दिन रहमत के बीच के माफी और मग़फिरत के और आख़ीरी जहन्नम से अज़ादी के है। इस महीने अपने नीचे काम करने वाले (मज़दूर, अफ़सर, सिपाही, व तलाबा) का वज़ीफा आसान करने वाले (मालिकों, मैनेजरों, अमीरों, कमांडरों) को अल्लाह तआला माफ़ कर जहन्नम की आग से निजात दे देता है। इस महीने चार चीज़ें कसरत से कि जाएं! जिसमें दो चिज़ें अल्लाह तआला को बहुत पसन्द आती है जोकि कलमा-ए-शहादत और इस्तकफार पढ़ना है। वैसे भी दोनो को हर वक्त पढ़ना ज़रूरी है। जोकि अल्लाह तआला से जन्नत की तलब करना और जहन्नत की आग से बचने की पनाह मांगना है। इस महीने किसी पियासे को पानी पिलाने वाला, कयामत के दिन प्यासा नही रहेगा),

(सहीह बुख़ारी एक हदीस शरीफ में फरमाया गया हैः (एक शख़्स जो रामज़ान के महीने में रोज़ें रखना फर्ज़, वज़ीफा मानता है। और अल्लाह तआला से सवाब की उम्मीद से रोज़ा रखता है। उसके सारे पिछले गुनाह माफ हो जाते है)। यानि, रोज़ा अल्लाह का हुकुम मानना और सवाब की उम्मीद से रखना लाज़मी है। रोज़ा लम्बा होने की या ताकत की कमी की शिकायत ना करना शर्त है। दिन का लम्बा होना और बेरोज़दारों के दरमियान अपनी ताकत से रोज़ा रखने को फिरसत और गनिमत समझा जाए।

हाफ़िज़ (हदीस आलिम) अबदुल अज़ीम-ए-मुनज़ीरी एततरग़ीब वेत्तरग़ीब किताब में और हफीज़ अहमद बेहेकी (सूनेन) किताब में, जाबिर बिन अबदुल्लाह रज़िअल्लाहु तआला अन्हा ने खबर दी हदीस शरीफ़ के हवाले से की (अल्लाहु तआला मेरी उम्मत पर रमज़ान शरीफ़ में पाँच चीज़ें एहसान करता है जोकि किसी भी पैग़म्बर को अता नही की गई।

1. रमज़ान की पहली रात अल्लाहु तआला मोमिनों पे रहमत फरमाता है।रहमत अता किया गया कुल पे बिलकुल भी अज़ाब नाज़ील नही करता।

2. इफतार के वक्त रोज़ेदार के मुहँ की खुशबूह अल्लाह तआला को हर खुशबूह से ज़्यादा पसन्दीदा है।

3. फरिश्तें, रमज़ान में दिन रात, रोज़ेदारों की माफी के लिए दुआ करते है।

4. अल्लाह तआला रोज़े वालों को, आखिरत में देने के लिए, रमज़ान शरीफ़ में जन्नत में जगह ताईन फरमाता है।

5. रमज़ान शरीफ़ के आखरी दिन, तमाम रोज़दार मोमिनों को माफ़ कर देते है) फरमाया।हज़रत इमाम-ए-रब्बानी "क्द्वीसी सिरूह" अपने मख्तुबात की पहली जिल्द, पेंतालीसवीं मकतूब में फरमा रहें हैं

(रमज़ान शरीफ़ के महीने में अदा की गई नफिल नमाज़, ज़िक्र, सदका और तमाम नफिल इबादतों का सवाब दूसरे महीने में फर्ज़ अदा किए जितना है।इस महीने अदा किया गया एक फर्ज़ दूसरे महीने में 70 मरतबा अदा किए जाने जितना है।इस महीने एक रोज़दार को इफ़तार देने वाले के गुनाह माफ़ होगे।जहन्नुम से अज़ाद हो जाएगा, इस रोज़दार के जितना उसे भी सवाब मिलेगा, इस रोज़दार का सवाब कुछ भी कम नही होगा।इस महीने अपने नीचे काम करने वालों के काम आसान कर देना, उनकी इबादतों की आदयगी आसान बना देने वाले मालिक को भी माफी मिल जाएगी।जहन्नुम से आज़ाद हो जाएगें। रसूल्लुल्लाह इस महीने बंदियों/एसिरों को अज़ाद कर उनकी चाह की हर चीज़ दिया करते थे।इस महीने इबात और अच्छे काम अदा करने वालों को पूरे साल ये काम करना नसीब होगा।इस महीने की बेअदवी करना गुनाह करने वाले का पूरा साल गुनाह करते हुए निकलेगा।ये महीना फिरसत जानना चाहिए।जितना ज़्यादा हो सके इबादत करनी चाहिए।अल्लाह तआला जिन कामों से राज़ी हो वो अदा किए जाने चाहिए।ये महीना आखिरत कमाने के लिए फिरसत जानना चाहिए।कुरआन शरीफ रमज़ान में उतारा गया, कदर की रात इस महीने मे है।रमज़ान शरीफ़ में खजूर से रोज़ा खोलना सुन्नत है।इफतार के वक्त (ज़ेहबेज़म्मा' बेबेतेलीतल उरूक वे सेबे तेले अजर इंशाअल्लाह तआला का पढ़ना सुन्नत होना तबेईन शेलबी हशीएसीनदे मे लिखा है।) तरावीह पढ़ना व खत्म करना मुहीम सुन्नत है।

TACEV
FAHRETTİN TACAR EĞİTİM VAKFI

E-mail:-ilmelazim@gmail.com

Website www.hakikatbookstoreindia.com